प्रथम आवृत्ती

कोरा कागद: मृत्यूचा संदेश

एक गूढ कथा

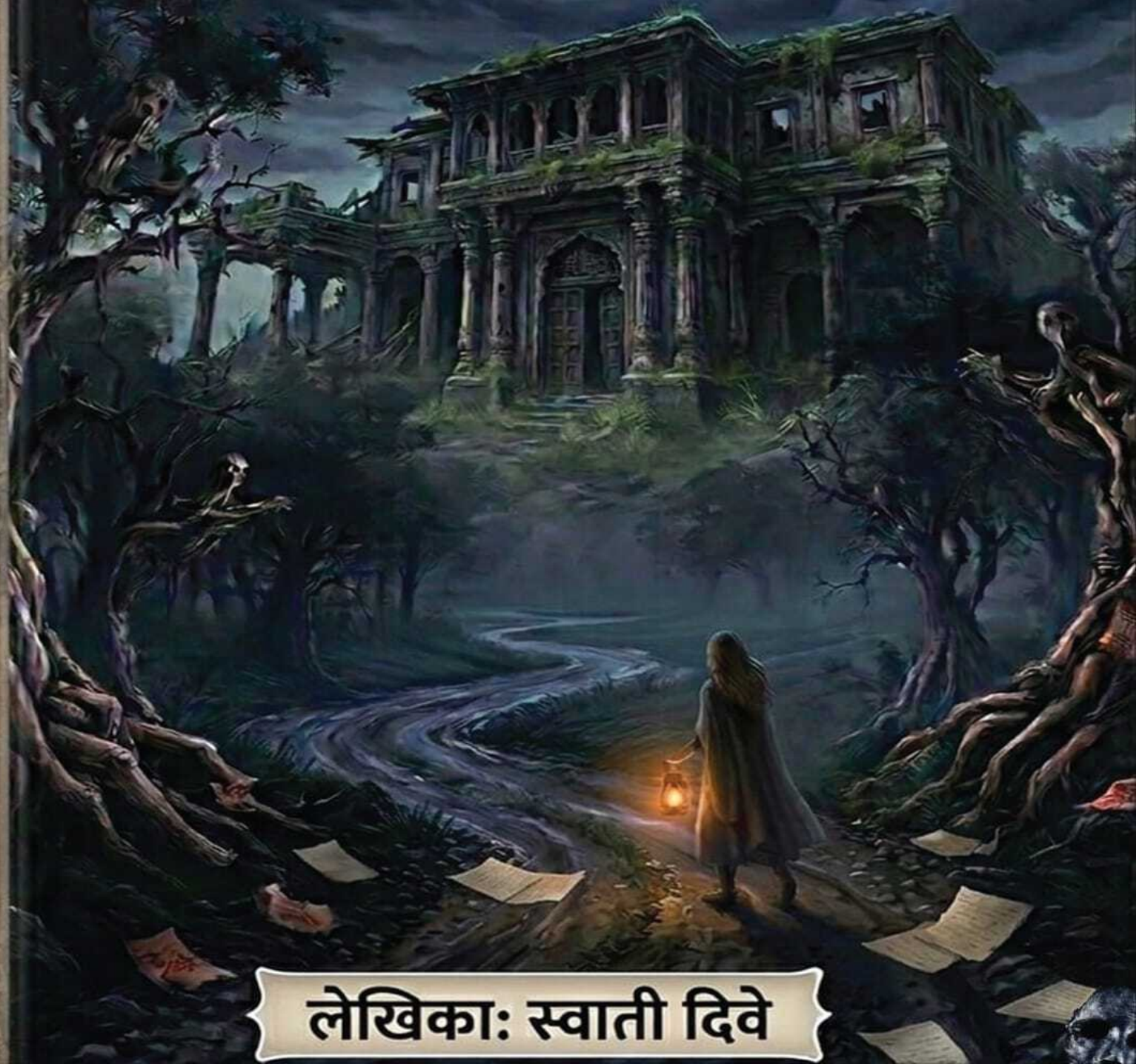

लेखिका: स्वाती दिवे

कोरा कागद: मृत्यूचा संदेश
लेखिका: स्वाती दिवे

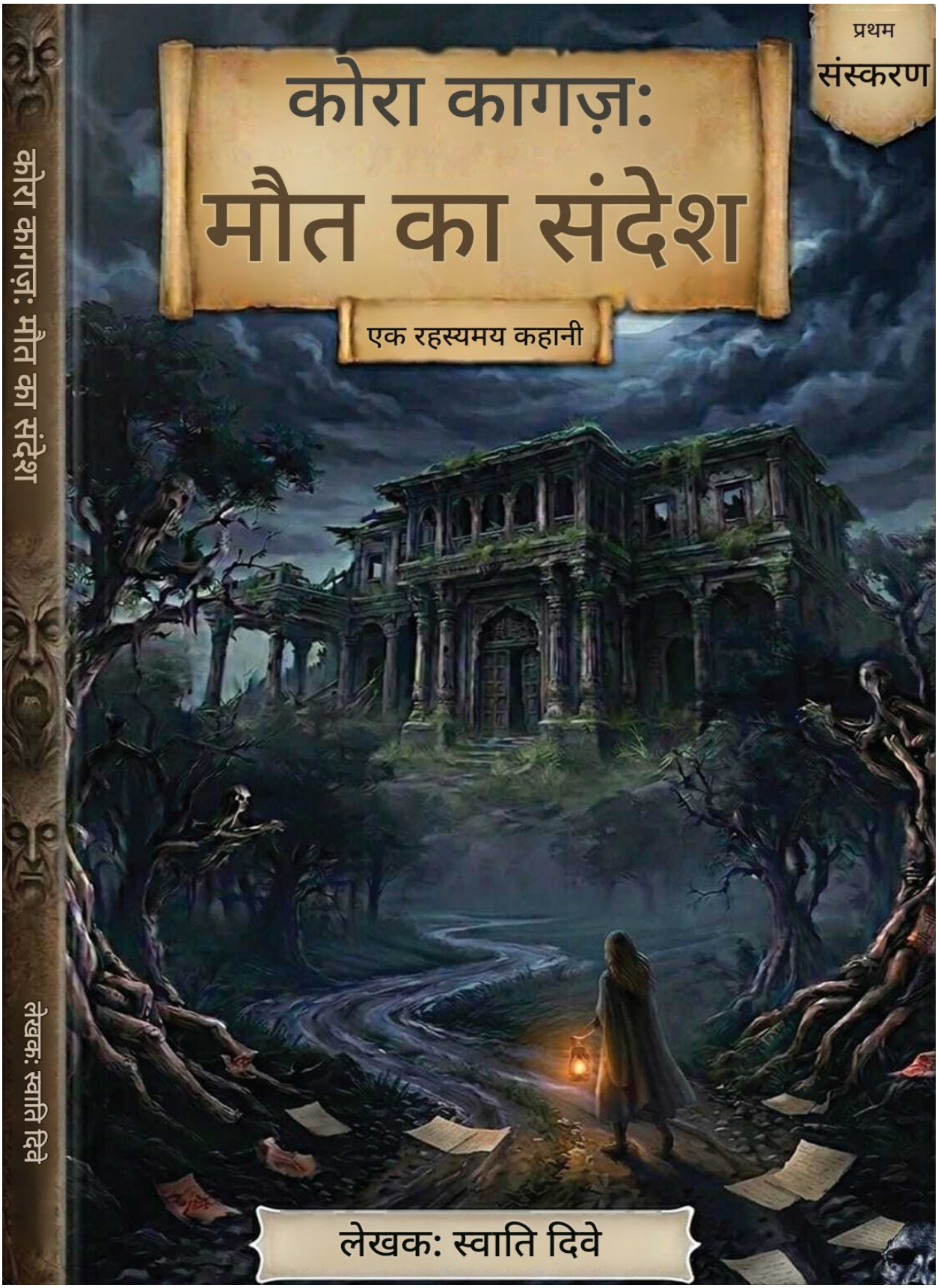

कोरा कागज़:
मौत का संदेश

प्रथम
संस्करण

एक रहस्यमय कहानी

लेखक: स्वाति दिवे

कोला कागज: मृत्यु का संदेश

एक रहस्यमय कहानी

लेखिका: स्वाति दिवे

प्रथम संस्करण

ईमेल आईडी swatidive7890@gmail.com

सर्वाधिकार सुरक्षित।

लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी रूप में (इलेक्ट्रॉनिक, फोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग) पुनरुत्पादित करना, संग्रहित करना या प्रसारित करना अपराध है।

प्रकाशन: 2026

गीत के बोल: स्वाति दिवे

मूल्य: 260 रुपये/-

पेशकश पुस्तिका

मेरी अपनी हठधर्मिता, अस्तित्व और आत्मसम्मान के प्रति समर्पण।

प्रस्तावना

कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिनकी हम तलाश नहीं करते, फिर भी वे हमें मिल जाती हैं। यह किताब या यह कहानी भी वैसी ही है। हम हमेशा कहते हैं कि शब्द अमर होते हैं। लेकिन क्या होगा अगर वही शब्द किसी के खून के प्यासे हों?

एक खाली कागज पर लिखा मृत्यु संदेश महज एक काल्पनिक डरावनी कहानी नहीं है, बल्कि मानवीय स्वभाव, जिज्ञासा और भाग्य के खेल की एक रोमांचक यात्रा है। इस कहानी को पढ़ते समय आपको निश्चित रूप से यह एहसास होगा कि धूल से ढके दस्तावेज़ और खून से लिखे श्राप आज भी कहीं न कहीं जीवित हैं।

आर्यन और मीरा, इन दो पात्रों के माध्यम से मैंने एक ऐसी अदृश्य शक्ति के साथ टकराव को दर्शाया है जो व्यक्ति को असहाय बना देती है। मुझे पूरा विश्वास है कि इसका रहस्य आपको अंत तक बांधे रखेगा।

- स्वाति डाइव

प्रस्तावना: दो आत्माओं का मिलन और नियति का खेल

रुद्रपुर के उस अंधकारमय महल में कदम रखने से पहले ही, आर्यन और मीरा की जिंदगी मुंबई के चहल-पहल भरे शहर में एक नया मोड़ ले रही थी। इस कहानी की असली शुरुआत उस महल में नहीं, बल्कि एक पुराने कैफे में हुई मुलाकात से हुई थी।

आर्यन: एक अभिशाप का अनजाने में वारिस

आर्यन एक शांत, गंभीर और अध्ययनशील युवक था। पेशे से वह एक 'ऐतिहासिक शोधार्थी' था। उसे पुरानी इमारतों, किलों और नक्काशी में विशेष रुचि थी। लेकिन इस रुचि के पीछे एक छुपा हुआ कारण था—उसके

पिता विश्वनाथराव की रहस्यमय मृत्यु। आर्यन जब छोटा था, उसके पिता का रुद्रपुर में निधन हो गया था, लेकिन उसकी माँ ने उसे हमेशा उस गाँव और महल से दूर रखा था। आर्यन के मन में हमेशा एक ही सवाल रहता था, "मेरे पिता वहाँ क्यों गए थे और उनका इतना भयानक अंत क्यों हुआ?"

मीरा: उत्साह का झरना

दूसरी ओर, मीरा एक आधुनिक विज्ञापन कंपनी में ग्राफिक डिजाइनर के रूप में काम करती थी। वह स्वभाव से बहुत चंचल, साहसी और कल्पनाशील थी। रंगों से खेलना और चित्रों के माध्यम से कहानियां कहना उसका शौक था। उसका परिवार मध्यमवर्गीय था, लेकिन उसकी सोच प्रगतिशील थी। उसे रहस्य कथाएं पढ़ना बहुत पसंद था, लेकिन उसे यह नहीं पता था कि उसका अपना जीवन जल्द ही एक बड़ी रहस्य कथा का हिस्सा बन जाएगा।

वह पहली मुलाकात

दोनों की पहली मुलाकात एक कला प्रदर्शनी में हुई थी। आर्यन वहां एक प्राचीन मूर्ति का अध्ययन करने आया था, जबकि मीरा फोटोग्राफी के लिए आई थी। एक पुरानी, आंशिक रूप से जली हुई पांडुलिपि को देखते हुए उनकी नजरें मिलीं।

"तुम्हें क्या लगता है कि यह पांडुलिपि किसकी है?" मीरा ने सहज भाव से पूछा।

आर्यन ने उसकी ओर देखा और चश्मा ठीक करते हुए कहा, "यह उस परिवार की कहानी है जिसने अपना अस्तित्व राख में दफना दिया। इसे पढ़ने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए।"

वहीं से उनकी बातचीत शुरू हुई। आर्यन का गहन ज्ञान और मीरा का जिज्ञासु स्वभाव एक दूसरे के पूरक थे। अगले छह महीनों में उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई।

रुद्रपुर जाने वाली सड़क

एक दिन आर्यन को अपने पिता की खून से सनी एक पुरानी डायरी मिलती है। डायरी में बार-बार 'रुद्रपुर' और 'खाली कागज' शब्द लिखे थे। आर्यन को एहसास होता है कि उसे अपने जीवन के खालीपन को भरने के लिए रुद्रपुर जाना ही होगा।

"मीरा, यह खतरनाक हो सकता है। मैं अपने परिवार के इतिहास के बारे में जानना चाहता हूं," आर्यन ने उसे चेतावनी दी थी।

लेकिन मीरा ने उसका हाथ थामते हुए दृढ़ता से कहा, "आर्यन, तुम अकेले नहीं जाओगे। हम साथ चलेंगे। सच्चाई जो भी हो, हम उसका मिलकर सामना करेंगे।"

मीरा के प्रेम और साहस ने ही आर्यन को रुद्रपुर के द्वार तक पहुँचाया था। उन्हें लगा था कि यह महज़ एक पुराने महल की सैर होगी, लेकिन नियति ने उनके लिए मृत्यु का संदेश लिख रखा था। आर्यन के पिता जिस खाली पन्ने से डरते थे, वही अब इन दोनों प्रेमियों के जीवन की परीक्षा लेने वाला था।

अध्याय 1: रुद्रपुर में उस बक्से की खोज

रुद्रपुर... पता नहीं ये गाँव नक्शे पर था या नहीं, लेकिन वहाँ के जंगल में छाई खामोशी दिल दहला देने वाली थी। आर्यन और मीरा घंटों की यात्रा के बाद आखिरकार द्वार पर पहुँच गए थे। बारिश के मौसम के कारण हवा में एक अजीब सी नमी थी, जो हड्डियों तक कंपकंपा रही थी।

उनके सामने 'शापित किला' खड़ा था। पीढ़ियों से बंद, जर्जर और लताओं से ढका हुआ, वह किला अजगर जैसा दिखता था।

किले की दहलीज

"आर्यन, क्या हम सच में अंदर जा रहे हैं?" मीरा ने शॉल ठीक करते हुए पूछा। उसके हाथ में लालटेन कांप रही थी।

"जी मीरा। इस बक्से का ज़िक्र दादाजी की डायरी में था। अगर हम अपने पूर्वजों पर लगे श्राप को हमेशा के लिए मिटाना चाहते हैं, तो हमें वह बक्सा ढूंढना ही होगा," आर्यन का जवाब दृढ़ था, लेकिन उसकी आँखों में एक तरह का डर छिपा हुआ था।

महल का मुख्य द्वार आधा खुला हुआ था। जैसे ही वे अंदर दाखिल हुए, एक अजीब सी 'कुर्र्र' की आवाज़ आई, मानो महल खुद उनका स्वागत कर रहा हो। अंदर हर तरफ धूल और गंदगी फैली हुई थी। हवा में पुराने कागजों और सड़ती हुई लकड़ी की गंध थी।

बॉक्स को ट्रैक करें

डायरी में लिखे नोट्स के अनुसार, बक्सा महल के तहखाने में होना चाहिए था। तहखाने की सीढ़ियाँ पथरीली और फिसलन भरी थीं। आर्यन ने लालटेन को ऊँचा उठाया। दीवारों पर पड़ रही परछाइयाँ किसी राक्षस की तरह हिलती हुई प्रतीत हो रही थीं।

अचानक, मीरा को कुछ महसूस हुआ। "आर्यन, क्या तुमने सुना?"

"क्या?"

"ऐसा लग रहा है जैसे कोई फुसफुसा रहा हो... कोई कह रहा हो 'खाली कागज... खाली कागज।'"

आर्यन एक पल के लिए रुका, लेकिन वहाँ केवल हवा की सीटी की आवाज़ और दूर से आती उल्लू की आवाज सुनाई दे रही थी। "चिंता मत करो, मीरा, जल्दी आओ।"

रहस्यमयी बॉक्स खोज

तहखाने के कोने में, एक पुरानी अलमारी के पीछे, उन्हें एक लकड़ी का तख्ता मिला। जब उन्होंने उसे हटाया, तो उसमें एक छोटा सा छेद था। आर्यन ने अंदर हाथ डालकर एक भारी वस्तु निकाली। यह एक प्राचीन लकड़ी का बक्सा था। इस पर तांबे की नक्काशी थी और बीच में गहरे लाल रंग का एक पत्थर जड़ा हुआ था।

डिब्बे पर धूल की मोटी परत जमी हुई थी। जैसे ही आर्यन ने धूल हटाई, डिब्बे पर खुदा हुआ एक संदेश सामने आया:

"जो सत्य की खोज करना चाहता है, उसे सर्वप्रथम मृत्यु का संदेश पढ़ना होगा।"

मीरा की नज़र डिब्बे के निचले हिस्से पर पड़ी। वहाँ एक 'खाली कागज़ का टुकड़ा' चिपका हुआ था। लेकिन वह कागज़ साधारण नहीं था; वह अपने आप हल्का-हल्का चमक रहा था।

भयानक शुरुआत

जैसे ही आर्यन ने कागज़ अपने हाथ में लिया, महल का दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया। दीपक की लौ नीली हो गई। अचानक, खाली कागज़ पर लाल अक्षर उभरने लगे—जैसे कोई अदृश्य हाथ से खून से लिख रहा हो।

"आपका स्वागत है... लेकिन यहाँ से निकलने का एकमात्र रास्ता राख से होकर गुजरता है!"

मीरा कांप उठी। बाहर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आ रही थी। उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें न केवल वह संदूक मिल गया है, बल्कि उन्होंने एक भयानक अभिशाप को भी जगा दिया है जो वर्षों से सुप्त था।

अध्याय 2: रक्तपत्रों और महल के खंडहरों को समझना

तहखाने की घुटन भरी हवा में आर्यन के हाथ में पकड़ा खाली कागज कांप रहा था। लालटेन की नीली लौ कभी-कभी टिमटिमा रही थी, मानो वह भी अपने चारों ओर मौजूद अदृश्य शक्ति से डर रही हो। मीरा ने आर्यन का हाथ कसकर पकड़ रखा था। उसकी निगाहें कागज पर टिकी थीं, जिस पर अब लाल बिंदु उभरने लगे थे।

अदृश्य कलम का रोमांच

पहले तो वे सिर्फ खून के धब्बे लग रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे वे धब्बे आपस में जुड़ने लगे और अक्षरों का रूप लेने लगे। बिना कलम या स्याही के कागज पर शब्द उकेरे जा रहे थे। हर शब्द एक पतली 'चिर्र्र्' ध्वनि के साथ बन रहा था, जैसे गर्म तवे पर पानी की बूंदें गिरती हैं।

मीरा ने अपनी सांस रोक ली और पढ़ना शुरू किया, "जो भी इस संदूक को छुएगा, वह अपनी मृत्यु का अनुबंध स्वयं ही कर लेगा। रुद्रपुर का यह महल अब तुम्हारा आश्रय बनेगा... जब तक तुम्हारे रक्त की अंतिम बूंद इस धरती पर न गिर जाए!"

"आर्यन, इस कागज़ को फेंक दो! हमें अभी यहाँ से निकलना होगा," मीरा चिल्लाई। उसकी आवाज़ तहखाने की दीवारों से टकराकर गूंज उठी।

किला

आर्यन ने कागज़ को हटाने की कोशिश की, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि कागज़ चुंबक की तरह उसके हाथ से चिपक गया। "यह हट नहीं रहा, मीरा! यह कागज़ मेरे हाथ से चिपक गया है!" आर्यन पसीने से तरबतर होकर उसे हटाने की कोशिश करता रहा। आखिरकार, जब उसने ज़ोर से खींचा, तो कागज़ नीचे गिर गया, लेकिन कागज़ का निशान आर्यन के हाथ पर एक लाल धब्बे की तरह दिखाई दे रहा था।

दोनों बिना पीछे देखे तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। लेकिन जैसे ही वे ऊपरी हॉल में पहुँचे, वे चौंक गए। माघा के लिए जो दरवाज़ा आधा खुला था, वह अब पूरी तरह बंद था। आर्यन ने दरवाज़े का हैंडल खींचा, लेकिन वह हिला तक नहीं।

"क्या इसे किसी ने बाहर से अंदर डाला है?" मीरा ने पूछा। "नहीं मीरा, यह बाहर से नहीं है... यह किला अंदर से बंद है," आर्यन ने दरवाजे पर जोर से दस्तक दी, लेकिन लकड़ी इतनी भारी थी कि ऐसा लग रहा था मानो वह दीवार का ही हिस्सा बन गई हो।

किले का बदलता स्वरूप

अचानक, महल की पुरानी घड़ी बजने लगी। टॉम... टॉम... टॉम... बारह बार बजी और महल में सन्नाटा और भी भयानक हो गया। अचानक, दीवार पर टंगी पुरानी तैल चित्रकलाएँ हिलने लगीं। ऐसा लगा मानो उन चित्रों में बने लोगों की आँखें आर्यन और मीरा का पीछा कर रही हों।

"आर्यन, उधर देखो!" मीरा ने एक कोने की ओर इशारा किया। वहाँ एक बड़ा सा दर्पण भाप से ढका हुआ था, और उस भाप पर किसी ने उंगली से लिखा था— 'खोज शुरू हो गई है।'

रहस्यमय छाया नाटक

महल की छत से पानी की बूँदें गिरने लगीं, लेकिन वो पानी नहीं था। उसका रंग गहरा लाल था। महल के हर कोने से घंटियों की आवाज़ आने लगी। ऐसा लग रहा था मानो कोई नर्तकी अदृश्य रूप में वहाँ नृत्य कर रही हो। आर्यन ने लालटेन उठाई और लंबे गलियारे में एक काली परछाई को तेज़ी से चलते देखा।

"वहाँ कौन है?" आर्यन ने जोर से पूछा, लेकिन जवाब में केवल एक क्रूर हंसी सुनाई दी।

उन्हें एहसास हुआ कि उस बक्से ने न केवल एक संदेश पहुंचाया था, बल्कि उस महल में कैद एक पुराने अभिशाप को भी मुक्त कर दिया था। अब वे केवल बक्से को ढूंढ नहीं सकते थे।

अध्याय 3: रघुनाथराव का क्रूर इतिहास और रक्त संबंध

आर्यन ने पुस्तकालय में उस पुरानी डायरी के पन्ने एक-एक करके पलटे, और इस तरह एक के बाद एक चौंकाने वाले खुलासे होते गए। धूल से ढके उन पन्नों में महज़ शब्द नहीं थे, बल्कि खून से लिखा एक परिवार

का काला इतिहास था। मीरा आर्यन के कंधे के पास खड़ी थी, उसकी आँखें भय और जिज्ञासा से चौड़ी हो गई थीं।

रघुनाथराव देशमुख कौन थे?

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रघुनाथराव देशमुख रुद्रपुर के सबसे धनी और उतने ही क्रूर जागीरदार थे। उन्होंने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए इस महल का निर्माण करवाया था। लेकिन रघुनाथराव केवल धन-दौलत से संतुष्ट नहीं थे; वे अमरता चाहते थे। उन्हें डर था कि उनकी मृत्यु के बाद कोई उनकी अपार संपत्ति छीन लेगा।

डायरी में लिखे अनुसार, रघुनाथराव आर्यन के परदादा थे। आर्यन के पिता हमेशा अपने परिवार के पुराने महल के बारे में बात करने से बचते थे, लेकिन आज आर्यन को उस चुप्पी का अर्थ समझ में आने लगा था। आर्यन के शरीर में उसी रघुनाथराव का खून बह रहा था, जिसने इस महल को मौत का जाल बना दिया था।

वह भयानक अभिशाप और 'उसकी' शिकार

"आर्यन, इधर देखो... यह नाम पढ़ो," मीरा ने डायरी के एक कोने की ओर इशारा किया। वहाँ 'रत्ना' नाम लिखा हुआ था।

रत्ना इस महल में एक साधारण नौकरानी थी, लेकिन वह स्त्रियों के प्रति आकर्षित थी। रघुनाथराव की उस पर बुरी नज़र थी। जब रत्ना ने उसकी वासना का विरोध किया, तो रघुनाथराव ने क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं। उसने रत्ना को महल की एक गुप्त दीवार में जिंदा दफनाने का आदेश दिया। जिस रात उसे दीवार में बंद किया गया, रत्ना चीखी और उसने एक भयानक श्राप दिया:

"रघुनाथराव, जिस धन और विरासत के लिए आप मेरी बलि दे रहे हैं, वही आपके विनाश का कारण बनेगी। आपके परिवार का कोई भी वंशज जो इस महल की दहलीज पर कदम रखेगा, यह 'कोरा कागज' उसे मृत्यु को न्योता देगा। यह चक्र तब तक नहीं रुकेगा जब तक मेरी आत्मा को शांति नहीं मिल जाती!"

रत्ना की अंतिम सांस के साथ ही महल में एक अमानवीय शक्ति का संचार हो गया। रघुनाथराव ने सोचा कि उसने रत्ना को नष्ट कर दिया है, लेकिन वास्तव में उसने स्वयं अपना विनाश कर लिया था।

रघुनाथराव का अंत

रत्ना की मृत्यु के मात्र 13 दिन बाद रघुनाथराव पागल हो गए। उन्हें महल में हर जगह खाली कागज दिखाई देने लगे। कागज हवा में उड़कर उन पर आते और उन्हें घायल कर देते। एक सुबह रघुनाथराव उसी पुस्तकालय में मृत पाए गए। उनके शरीर पर कोई घाव नहीं था, लेकिन उनके हाथ में एक खाली कागज था, जिस पर खून से लिखा था— 'गणना गलत हो गई है।'

उनकी मृत्यु के बाद, देशमुखों की अगली पीढ़ियाँ महल छोड़कर शहर में शरण लेने चली गईं। लेकिन श्राप का सिलसिला टूटा नहीं था। यह बस सही समय की प्रतीक्षा कर रहा था।

आर्यन और मीरा: एक ही ढर्रे पर फंसे हुए जोड़े

"तो आर्यन, अब मुझे समझ आया कि तुम्हारे पिता इस महल से दूर क्यों रहना चाहते थे," मीरा ने धड़कते हुए कहा। "लेकिन इससे मेरा क्या लेना-देना है? मैं तो इस परिवार से नहीं हूँ!"

आर्यन ने डायरी का अगला पन्ना पलटा और वहां लिखे वाक्य को पढ़कर मीरा कांप उठी।

"जब भी वंश का उत्तराधिकारी अपनी प्रेमिका या पत्नी को इस महल में लाता है, तो रत्न की आत्मा उस महिला की बलि देकर स्वयं को मुक्त कर लेती है।"

इसका अर्थ यह था कि मीरा रत्न की आत्मा के लिए एक 'नया शरीर' या 'बलिदान' थी। मीरा को अब आर्यन के पूर्वजों द्वारा किए गए पापों का दंड भुगतना होगा।

जो उत्साह शुरू हो चुका है

अचानक, पुस्तकालय में रखी भारी डायरी आर्यन के हाथों से फिसलकर ज़मीन पर गिर गई। ज़मीन से काला धुआँ उठने लगा। महल की दीवारों से किसी के रोने की आवाज़ आने लगी—वह आवाज़ रत्ना की थी।

"आर्यन! देखो!" मीरा चिल्लाई।

पुराने कपड़े पहने और बिखरे बालों वाली एक परछाई पुस्तकालय के दरवाजे पर खड़ी थी। उसकी आँखें आग की तरह लाल थीं और उसके हाथ में वही 'खाली कागज' था। उसने धीरे-धीरे अपना हाथ मीरा की ओर बढ़ाया। दीपक की रोशनी पूरी तरह बुझ चुकी थी। पुस्तकालय की खिड़की से आती बिजली की रोशनी में, वे केवल उस परछाई का क्रूर चेहरा देख पा रहे थे।

रघुनाथराव का इतिहास अब वर्तमान काल में था और उनके सामने खड़ा था।

अध्याय 4: विश्वनाथराव का बलिदान और उस रात का रोमांच

उस अंधेरे कमरे में, जहाँ दीवारों के कोनों से खून टपक रहा था, आर्यन उस पुराने बक्से के सामने सुन्न होकर बैठा था। बक्से में रखी मानव खोपड़ी पर खुदा हुआ नाम—'विश्वनाथराव'—उसे अपने बचपन की उस भयानक रात की याद दिला रहा था, जिस रात उसके पिता उसे हमेशा के लिए छोड़कर चले गए थे।

विश्वनाथराव का रुद्रपुर आगमन

आर्यन के पिता विश्वनाथराव एक आधुनिक विचारक थे। वे कभी भी किले के श्राप में विश्वास नहीं करते थे। लेकिन 20 साल पहले, जब आर्यन मात्र 5 वर्ष का था, एक रात विश्वनाथराव को एक अज्ञात पत्र द्वारा रुद्रपुर बुलाया गया। पत्र में लिखा था कि यदि उन्होंने किले की भूमि सरकार को दान नहीं की, तो उनके परिवार का विनाश हो जाएगा।

किसी को बताए बिना, विश्वनाथराव खाली कागज पर लिखे संदेश का अनुसरण करते हुए इस 'शापित हवेली' तक पहुँच गए। उन्होंने सोचा कि यह कुछ गाँव के गुंडों का काम है, लेकिन हवेली में कदम रखते ही उन्हें एहसास हुआ कि दुश्मन कोई जीवित व्यक्ति नहीं, बल्कि एक 'असंतुष्ट आत्मा' थी।

झूमर के नीचे वो आखिरी पल

विश्वनाथराव ने इसी पुस्तकालय में बैठकर श्राप तोड़ने का प्रयास किया था। लेकिन रत्ना की आत्मा को केवल एक 'पीड़ित' चाहिए था। उस रात, रत्ना ने विश्वनाथराव को महल के बीचोंबीच स्थित उस विशाल हॉल में खड़ा कर दिया। उनके सिर के ऊपर लोहे की जंजीरों से लटका हुआ एक प्राचीन, भारी झूमर था, जो धूल से ढका हुआ था।

उस रत्न की अमानवीय शक्ति ने झूमर की जंजीरों को एक-एक करके तोड़ना शुरू कर दिया। विश्वनाथराव के पास हिलने-डुलने की भी ताकत नहीं बची थी, मानो उनके पैर ज़मीन पर कीलों से जड़े हों। अचानक, विशाल झूमर तेज़ी से नीचे गिर पड़ा। झूमर के नुकीले कांच और लोहे के सिरे सीधे विश्वनाथराव से टकराए। झूमर के भारी वज़न के नीचे वे पूरी तरह कुचल गए।

उसकी हत्या किसने की और उसकी मृत्यु कैसे हुई?

उनकी मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं थी, बल्कि रत्ना द्वारा जानबूझकर रचा गया एक क्रूर खेल था। झूमर के नीचे दबने के बाद भी रत्ना ने उन्हें तुरंत मरने नहीं दिया। उनके खून की हर एक बूंद उस खाली कागज में समा गई। जब उन्होंने अंतिम सांस ली, तो रत्ना ने उनके खून से उस खाली कागज पर लिखा— 'अगला नंबर वंश का है!'

दुनिया को लगा कि महल में घूमते समय एक पुराना झूमर उस पर गिर जाने से उसकी मौत हो गई, लेकिन सच्चाई यह थी कि उसे इसी महल के फर्श के नीचे खून के एक तालाब में दफनाया गया था।

चौंकाने वाला खुलासा

"आर्यन, देखो... इस खोपड़ी के पीछे कुछ लिखा हुआ है," मीरा ने कांपती उंगलियों से इशारा करते हुए कहा। खोपड़ी के पिछले हिस्से पर खून से सना एक निशान था—एक 'त्रिकोण'। यह त्रिकोण देशमुख परिवार की तीन पीढ़ियों के बलिदानों का प्रतीक था। पहली पीढ़ी रघुनाथराव (पागलपन से मृत्यु), दूसरी पीढ़ी विश्वनाथराव (झूमर के नीचे दबकर मृत्यु) और अब तीसरी पीढ़ी 'आर्यन' थी।

रत्न का अहंकार

तभी कमरे का दरवाजा ज़ोर से बजने लगा। बाहर से कोई विश्वनाथराव की आवाज़ में चिल्ला रहा था— "आर्यन... बाहर आओ... मुझे बचाओ!" यह रत्ना का नया खेल था। वह आर्यन के पिता का रूप धारण करके उसे बाहर खींचने की कोशिश कर रही थी। मीरा ने आर्यन का हाथ कसकर पकड़ लिया। "मत जाओ, आर्यन! वह तुम्हारा पिता नहीं है, वह तो एक भ्रम है!"

बाहर से आ रही आवाज़ अब एक भयानक चीख में बदल गई। विश्वनाथराव की मृत्यु का भयावह दृश्य कमरे की दीवारों पर तस्वीरों की तरह उभरने लगा। आर्यन अपने पिता को भारी झूमर के नीचे खून से लथपथ पड़ा देख सकता था और रत्ना उनके सीने पर पैर रखे खड़ी थी।
"अब तुम्हारी बारी है, आर्यन! तुम्हें अपने पिता के अधूरे बलिदान को पूरा करना होगा," रत्ना की आवाज पूरे महल में गूंज उठी।
आर्यन ने अपने पिता के बक्से से 'खंजर' उठा लिया। अब उसे एहसास हुआ कि यह लड़ाई सिर्फ खुद को बचाने के लिए नहीं, बल्कि अपने पिता की आत्मा को मुक्त करने और इस अभिशाप को हमेशा के लिए समाप्त करने के लिए थी।

अध्याय 5: तहखाने का गुप्त मार्ग और विश्वनाथराव के अंतिम शब्द

आर्यन का ध्यान कमरे के बाहर से आ रही विश्वनाथराव की आवाज़ पर पूरी तरह से भटक गया। "आर्यन... बाहर आओ बेटा... मुझे बहुत दर्द हो रहा है!" यह आवाज़ इतनी वास्तविक थी कि आर्यन के हाथ में मौजूद खंजर कांपने लगा। मीरा ने उसे कसकर पकड़ लिया, "आर्यन, होश में आओ! तुम्हारे पिता 20 साल पहले गुज़र गए। यह रत्ना की साज़िश है, वह यह सब तुम्हें और मुझे इस कमरे से बाहर निकालने के लिए कर रही है!"

गुप्त मार्ग का खुलासा

आर्यन ने अपनी आँखें बंद कीं और खुद पर काबू पाया। "हाँ मीरा, तुम सही कह रही हो। लेकिन हमें यहाँ से निकलना होगा। यह दरवाज़ा अब सुरक्षित नहीं है।" उसने कमरे में तलाशी शुरू की। अचानक उसकी नज़र उस पुराने बक्से पर पड़ी जिससे उसने खंजर निकाला था। बक्से के नीचे ज़मीन पर खून का धब्बा था, लेकिन वह धब्बा तीर की तरह एक कोने की ओर इशारा कर रहा था।
आर्यन ने कोने में खड़ी भारी लकड़ी की संरचना को बलपूर्वक धक्का देकर हटा दिया। उसके पीछे एक छोटा सा पत्थर का दरवाजा था। उस पर भी वही 'त्रिकोण' उकेरा हुआ था। आर्यन ने दरवाजा खोला और ठंडी, तेज हवा उसके चेहरे पर लगी। उसके सामने अंधेरी सीढ़ियाँ नीचे की ओर जा रही थीं।
"यह तहखाना है, मीरा... शायद बाबा को इसी रास्ते से नीचे उतारा गया होगा," आर्यन ने लालटेन उठाते हुए कहा, और वे दोनों संकरे रास्ते से नीचे उतरने लगे।

तहखाने में सन्नाटा पसरा हुआ था।

तहखाने में पहुँचते ही उन्होंने एक विशाल हॉल जैसी जगह देखी। दीवारों पर पुराने मशाल स्टैंड लगे थे, लेकिन अब उन पर केवल कालिख ही बची थी। बीच में एक बड़ा पत्थर का चौकोर टुकड़ा था। लालटेन की

रोशनी में उन्होंने देखा कि उस चौकोर टुकड़े पर एक खाली कागज रखा हुआ था, लेकिन यह कागज बाकी कागजों से बड़ा और पुराना था।

जैसे ही वे चौक पर पहुँचे, उन्होंने ज़मीन पर किसी की हड्डियाँ बिखरी देखीं। मीरा डर के मारे आर्यन से लिपटकर वहीं खड़ी रही। "आर्यन, ये... ये रत्ना की हड्डियाँ तो नहीं हो सकतीं, है ना?"

"नहीं मीरा, ये रत्ना के नहीं हैं। ये उन लोगों के हो सकते हैं जिनकी बलि रघुनाथराव ने और फिर इस महल ने दी थी," आर्यन ने कहा।

विश्वनाथ राव का अंतिम संदेश

अचानक, उस खाली कागज पर अक्षर उभरने लगे, लेकिन इस बार अक्षर खून से नहीं, बल्कि कोयले से लिखे गए थे— "आर्यन, मैं तुम्हारा इंतजार कर रही थी।"

आर्यन की आंखें चौड़ी हो गईं। "ये बाबा की लिखावट है! मीरा, ये बाबा लिख रहे हैं!"

कागज पर निम्नलिखित लिखा था:

"बेटा, जब तुम यह पढ़ रहे होगे, रत्ना तुम्हारे बहुत करीब हो सकती है। झूमर के नीचे दबते समय मुझसे एक गलती हुई थी—मैंने रत्ना की आँखों में देखा था। वह गलती तुम मत करना। रत्ना की शक्ति उसके 'कोरे पन्ने' में नहीं, बल्कि इस महल के 'अंदरूनी हिस्से' में है। वहीं उसका दिल दफन है। अगर तुम मीरा और खुद को बचाना चाहते हो, तो तुम्हें वह खंभा ढूंढना होगा जहाँ रत्ना दीवार में जिंदा दफन हो गई थी।"

रत्न की वास्तविक खोज

अचानक तहखाने का तापमान शून्य से नीचे गिर गया। उनकी सांसें सफेद धुएं की तरह निकल रही थीं। आंगन के पीछे अंधेरे से एक आकृति उभरी। यह रत्ना थी! लेकिन अब वह केवल एक परछाई नहीं थी। उसने एक सफेद साड़ी पहनी हुई थी, जो पूरी तरह खून से सनी हुई थी। उसके पैर अंदर की ओर मुड़े हुए थे और उसके नाखून किसी जानवर की तरह बढ़ गए थे।

"विश्वनाथ... अगर तुम मर भी जाओ, तो भी तुम्हारा पितृत्व तो खत्म नहीं होगा, है ना?" रत्ना की आवाज़ टूटे हुए कांच की तरह निकली। "लेकिन आज तुम्हारा बेटा मेरा सबसे बड़ा शिकार होगा। तुम्हारा संदेश अब उसे बचा नहीं पाएगा!"

रत्ना ने हवा में हाथ लहराया और तहखाने की पत्थर की दीवारों से आर्यन और मीरा की ओर पत्थर गिरने लगे। आर्यन ने मीरा को खींचकर एक खंभे से सटा दिया।

संघर्ष की नई दिशा

आर्यन को अब मुख्य स्तंभ का पता चल गया था। महल के बीचोंबीच स्थित वह विशाल स्तंभ, जो ऊपरी मंजिल तक जाता था, वहीं रत्न का रहस्य छिपा था। लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए उन्हें इस मौत के जाल से निकलना होगा।

"मीरा, हमें ऊपर दौड़ना होगा! उस मुख्य खंभे की ओर!" आर्यन चिल्लाया।

वे भागने लगे, लेकिन रत्ना तेजी से उनका पीछा कर रही थी। तहखाने में पानी अचानक बढ़ने लगा - यह पानी नहीं, बल्कि खून की बाढ़ थी, जो उन्हें डुबोने की कोशिश कर रही थी।

अध्याय 6: मुख्य स्तंभ का रहस्य और रक्त की बाढ़

तहखाने में खून से लथपथ बाढ़ तेजी से फैल रही थी। आर्यन और मीरा के पैर चिपचिपे, गर्म तरल में फंस रहे थे। उनका हर कदम मौत के मुंह से निकलने जैसा था। उनके पीछे, रत्ना की क्रूर हंसी और दीवारों पर उसके नाखूनों की खरोंच की आवाज करीब आती जा रही थी।

"आर्यन, जल्दी करो! पानी मेरे सीने तक आ गया है!" मीरा चिल्लाई। उसके चेहरे पर डर और थकावट साफ झलक रही थी।

आर्यन ने एक हाथ से लालटेन उठाई और दूसरे हाथ से मीरा को सहारा दिया। ठीक उनके सामने, उन्हें एक लोहे की सीढ़ी दिखाई दी जो सीधे महल के मुख्य हॉल में जा रही थी। "देखो मीरा, सीढ़ी! हमें वहाँ पहुँचना ही होगा!"

मुख्य हॉल में वह विशालकाय स्तंभ

किसी तरह वे खून की बाढ़ से गुज़रते हुए ऊपरी हॉल तक पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने देखा कि महल के बीचोंबीच स्थित विशाल लकड़ी का खंभा हिल रहा था। उस खंभे से इंसानों की चीखें सुनाई दे रही थीं। वह खंभा महज़ लकड़ी का टुकड़ा नहीं था, बल्कि उसमें रत्न की आत्मा कैद थी।

आर्यन को अपने पिता का संदेश याद आया— "उसका दिल वहीं दफन है।"

"मीरा, इस खंभे के अंदर कुछ है। हमें इसे तोड़ना होगा," आर्यन ने बक्से से निकाले पुराने खंजर को कसकर पकड़ लिया। लेकिन जैसे ही वह खंभे के करीब पहुंचा, हॉल में लगे झूमर और पुराने फर्नीचर के टुकड़े हवा में उड़ने लगे। रत्ना ने अब पूरे महल पर अपना नियंत्रण कर लिया था।

रत्न का अमानवीय अवतार

रत्ना हॉल के एक अंधेरे कोने से बाहर निकली। लेकिन अब उसका रूप पूरी तरह बदल चुका था। उसका शरीर अब मकड़ी जैसा लग रहा था।

यह लंबा था और उसकी आंखें आग के गोले की तरह चमक रही थीं।

"आर्यन देशमुख... तुम अपने पूर्वजों की तरह ही मूर्ख हो!" रत्ना की आवाज़ दीवारों से टकराकर गूंजी। "क्या तुम्हें लगता है कि तुम मुझे इस एक खंजर से मार सकते हो? इस महल की हर ईंट पर मेरा खून बहा है। यह खंभा मेरा शरीर है!"

रत्ना ने हवा में हाथ लहराया और हॉल के बड़े पर्दे सांप की तरह आर्यन और मीरा की ओर तेजी से बढ़ने लगे। मीरा पर्दों के जाल में फंस गई। "आर्यन! मैं सांस नहीं ले पा रही हूँ!"

खंजर का वार और रत्ना की चीख

बिना सोचे समझे आर्यन ने खंजर को सीधे मुख्य स्तंभ के केंद्र में घुसा दिया। जैसे ही खंजर स्तंभ में घुसा, महल में एक भयानक चीख गूंज उठी। यह आवाज किसी इंसान की नहीं थी; यह किसी शैतान की आवाज थी। स्तंभ से खून की धाराएं बहने लगीं।

रत्ना दर्द से कराहते हुए ज़मीन पर लोटने लगी। "नहीं! ये कैसे मुमकिन है? वो खंजर... वो रघुनाथराव का था!"

आर्यन को अब समझ आ गया था कि जिस हथियार से रत्ना की मृत्यु हुई थी, वही उसकी कमजोरी थी। उसने फिर पूरी ताकत से वार किया। खंभे की लकड़ी चटक गई और अंदर उन्हें एक धड़कता हुआ 'मानव हृदय' दिखाई दिया। वह हृदय रत्ना का था, जिसे रघुनाथराव ने तांत्रिक अनुष्ठान के द्वारा जिंदा ही दफना दिया था ताकि रत्ना की आत्मा हमेशा के लिए इस महल की गुलाम बनी रहे।

बलिदान का समय

लेकिन जैसे ही आर्यन तीसरा वार करने वाला था, वह 'खाली कागज़ का टुकड़ा' एक बार फिर उसकी आँखों के सामने आ गया। अब उस पर अंतिम संदेश लिखा हुआ था:

"यदि तुम हृदय को नष्ट करना चाहते हो, तो तुम्हें उसे अपने ही रक्त से अभिषेक करना होगा। एक ही रक्त का उत्तराधिकारी दूसरे रक्त का बलिदान करके ही इस अभिशाप को समाप्त कर सकता है।"

अर्थ स्पष्ट था। अगर रत्ना को हमेशा के लिए खत्म करना था, तो आर्यन को उस दिल पर अपना खून बहाना होगा। "मीरा, चली जाओ! मुझे यह करना ही होगा!"

"नहीं आर्यन! यह खतरनाक है!" मीरा चिल्लाई, लेकिन आर्यन ने अपना हाथ धारदार खंजर पर रख दिया। खून की धार मीरा के धड़कते दिल पर जा गिरी।

किले का कांपना

जैसे ही खून दिल के संपर्क में आया, दिल काला पड़ने लगा। रत्ना का शरीर हवा में घुलने लगा। लेकिन मरते समय उसने आखिरी कोशिश की। उसने महल की छत गिराना शुरू कर दिया। "अगर मुझे मरना है, तो यह महल तुम्हारी कब्र बनेगा!"

बड़े-बड़े पत्थर और लकड़ी के लट्ठे गिरने लगे। आर्यन मीरा को घसीटते हुए मुख्य द्वार की ओर भागा। ताला लगा हुआ द्वार अब थोड़ा सा खुल गया था क्योंकि श्राप टूट गया था।

बाहर बारिश रुक चुकी थी और क्षितिज पर भोर की पहली किरणें दिखाई दे रही थीं। लेकिन किला अब पूरी तरह ढहने की कगार पर था।

अध्याय 7: किले का प्रकोप और मृत्यु का जाल

आर्यन का रक्त रत्ना के हृदय पर लगते ही पूरा महल एक घायल जानवर की तरह कांपने लगा। मुख्य लकड़ी के खंभे से आती चीख-पुकार इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे। रत्ना का शरीर राख की तरह हवा में घुल

रहा था, लेकिन मरते समय उसने अपनी अमानवीय शक्ति का अंतिम प्रहार कर दिया था। महल की छत और भारी पत्थर की दीवारें ताश के पत्तों की तरह ढह रही थीं।

विनाश का तांडव

"आर्यन, जल्दी करो! दरवाजा खुल गया है!" मीरा चिल्लाई। उसने मुख्य दरवाजे की भारी कुंडी खींच दी थी। भोर की हल्की रोशनी अब अंदर आने लगी थी, जो बाहर से मुक्ति का संकेत दे रही थी।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। अचानक, छत से एक विशाल लकड़ी का बीम 'चटकने' की आवाज़ के साथ नीचे गिरा। आर्यन ने मीरा को एक तरफ धकेल दिया, लेकिन बीम सीधे आर्यन के बाएं पैर पर गिरा।

आह्ह्ह्ह! आर्यन के मुंह से दर्द भरी चीख निकली। उसका पैर पूरी तरह से भारी लकड़ी के नीचे फंस गया था। खून जमीन पर फैलने लगा।

मीरा का संघर्ष और रत्ना की अंतिम परीक्षा

"आर्यन!" मीरा दौड़कर उसके पास गई। उसने पूरी ताकत से बीम को उठाने की कोशिश की, लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। "मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी, आर्यन। हम दोनों बाहर निकलेंगे!"

महल के कोनों से 'काला कागज' अभी भी हवा में उड़ रहा था। हालाँकि रत्ना की आत्मा अब नष्ट हो चुकी थी, लेकिन इस महल में पिछले 100 वर्षों से संचित नकारात्मक ऊर्जा अब बाहर निकल रही थी। दीवारों पर बनी पुरानी तैल चित्रकलाएँ अब जलने लगी थीं और उनसे निकलने वाला काला धुआँ दम घोंट रहा था।

"मीरा, तुम जाओ! यह किला किसी भी क्षण गिर सकता है। अगर तुम यहाँ रुकी तो हम दोनों मारे जाएँगे," आर्यन ने दयनीय स्वर में कहा। उसके माथे से पसीना बह रहा था।

"नहीं आर्यन! अगर तुम मरना चाहते हो, तो हम साथ मरेंगे, लेकिन मैं तुम्हें इस नरक में नहीं छोड़ूंगी," मीरा की आँखों में दृढ़ निश्चय झलक रहा था। उसकी निगाहें एक तरफ पड़े उस पुराने खंजर पर पड़ीं, जिससे आर्यन ने रत्ना का दिल तोड़ा था।

रक्त वंशागति और मुक्ति का मार्ग

मीरा जानती थी कि यह महज़ लकड़ी नहीं थी, यह महल का जीवंत केंद्र था। उसने खंजर उठाया और बीम पर वार करने लगी। हैरानी की बात यह थी कि जैसे ही खंजर लकड़ी से टकराया, लकड़ी के बुरादे नहीं, बल्कि काला खून निकलने लगा। ऐसा लग रहा था मानो महल जीवित हो उठा हो और आर्यन को जाने देने को तैयार न हो।

"जब तक देशमुखों के खून का बदला नहीं लिया जाता, यह किला नहीं रुकेगा!" किले की दीवारों में एक अज्ञात आवाज गूंजी।

आर्यन को अब अपने पिता विश्वनाथराव का चेहरा याद आ गया। कैसे उन्होंने झूमर के नीचे कूदकर आर्यन की जान बचाई थी। "मीरा, सुनो... बाबा ने मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। आज मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ। यह कटार... सिर्फ यही कटार हमें बचा सकती है!"

अंतिम संघर्ष

आर्यन ने अपने हाथ के घाव से निकले खून को छुरे पर लगाया और मीरा की मदद से छुरे को बीम के बीचोंबीच घुसा दिया। पल भर में बीम रुई की तरह नरम हो गया। आर्यन ने अपना पैर बाहर निकाला, लेकिन उसका पैर बुरी तरह घायल हो गया था।

मीरा ने उसका हाथ अपने कंधे पर रखा और वे लंगड़ाते हुए दरवाजे की ओर बढ़े। उनके पीछे महल का मुख्य हॉल पूरी तरह ढह चुका था। धूल के बादल हवा में उड़ रहे थे। वह विशाल लकड़ी का खंभा, जहाँ रत्न का केंद्र था, अब जलकर राख हो चुका था।

मृत्यु की दहलीज पर

वे अभी दरवाजे तक पहुंचे ही थे कि जमीन में एक बड़ी दरार दिखाई दी। आर्यन और मीरा के बीच एक बड़ा सा अंतर आ गया। मीरा बाहर थी, जबकि आर्यन अभी भी महल के अंदर खड़ा था।

"आर्यन, कूदो! मुझे अपना हाथ दो!" मीरा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

बाहर, सूरज की पहली किरणें महल की दहलीज पर पड़ रही थीं। रत्न पर यह श्राप था कि सूर्य की रोशनी में उसकी शक्ति नष्ट हो जाएगी। लेकिन महल के ढहने की गति अब बहुत बढ़ गई थी। ऊपर से बड़े-बड़े पत्थर गिर रहे थे। आर्यन ने अपने घायल पैर से धक्का दिया और खाई के ऊपर से छलांग लगा दी।

मीरा ने उसका हाथ कसकर पकड़ा और उसे बाहर खींच लिया। उसी क्षण, विशाल 'शापित महल' एक जोरदार धमाके के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा। एक युग का अंत हो गया।

सुबह की खामोशी

आर्यन और मीरा महल से कुछ दूरी पर घास पर लेटे हुए थे। उनके शरीर पर चोट के निशान थे, कपड़े फटे हुए थे और चेहरे धूल से सने हुए थे। लेकिन उनकी आँखों में एक अलग ही शांति थी। रुद्रपुर के जंगल में अब पक्षियों की चहचाहट सुनाई दे रही थी।

आर्यन ने अपनी जेब से वह 'काला कागज' निकाला, जो अब भी उसके पास था। लेकिन अब उस कागज पर खून के धब्बे नहीं थे। उस पर कुछ भी नहीं लिखा था। वह सचमुच एक सादा, खाली कागज बन चुका था।

"सब खत्म हो गया, मीरा... सब कुछ खत्म हो गया। बाबा अब जरूर मुक्त हो गए होंगे," आर्यन ने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

यह तो इस कहानी का सिर्फ एक अध्याय था। महल तो ढह चुका था, लेकिन क्या राख के नीचे अभी भी कुछ छिपा था? क्या रत्ना की आत्मा सचमुच मुक्त हो गई थी, या उसने कोई नया 'मृत्यु संदेश' छोड़ दिया था?

अध्याय 8: राख में अवशेष और रुद्रपुर का नया चेहरा

रुद्रपुर के घने जंगलों में अब सन्नाटा पसरा हुआ था। दशकों से मृत्यु और भय का प्रतीक रहा विशाल 'शापित किला' अब पत्थरों, ईंटों और जली हुई लकड़ियों के ढेर में तब्दील हो चुका था। धूल धीरे-धीरे जमीन पर जम रही थी। सुबह की हल्की धूप राख के ढेर पर पड़ रही थी, मानो प्रकृति शाप से मुक्ति का जश्न मना रही हो।

विनाश के बाद पहली अनुभूति

आर्यन और मीरा टीले से कुछ दूरी पर गीली घास पर लेटे हुए थे। आर्यन के बाएं पैर से खून की एक पतली धारा बह रही थी, लेकिन अब शारीरिक पीड़ा में एक प्रकार की आध्यात्मिक मुक्ति का अनुभव हो रहा था। उसने अपनी भारी आँखें खोलीं और सामने देखा। महल के वे ऊँचे बुर्ज, वे नक्काशीदार खिड़कियाँ और वह भव्य द्वार—सब कुछ अब मिट्टी में सना हुआ था।

"मीरा... हम ज़िंदा हैं," आर्यन की आवाज़ सूखी थी, लेकिन उसमें स्पष्ट कृतज्ञता झलक रही थी।

मीरा ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। उसके बाल बिखरे हुए थे, कपड़े जगह-जगह से फटे हुए थे और चेहरा खून और काली धूल से सना हुआ था। वह खड़ी हुई और आर्यन को सहारा देते हुए बोली, "हाँ आर्यन, हम बाहर आ गए। रत्ना चली गई... वह श्राप खत्म हो गया। आज की सुबह हमारे लिए एक नया जन्म है।"

रहस्यमय धुआँ और राख में एक खंजर की खोज

वे दोनों एक-दूसरे के सहारे खड़े थे। आर्यन लंगड़ाते हुए गिरे हुए किले की ओर बढ़ा। किले के केंद्र से, जहाँ मुख्य लकड़ी का खंभा था, हल्का नीला धुआँ अभी भी उठ रहा था। यह धुआँ किसी साधारण आग का नहीं था; यह संकेत दे रहा था कि धरती के भीतर गहराई में कुछ जल रहा है।

आर्यन वहाँ पहुँचा। उसने राख के ढेर में कुछ चमकता हुआ देखा। वह झुका और पाया कि वही प्राचीन 'खंजर' वहाँ पड़ा था। जिस हथियार ने रत्न का हृदय भेदा था, वह खंजर, अब पूरी तरह काला हो चुका था, लेकिन उस पर खुदी हुई नक्काशी खून की तरह गहरे लाल रंग में चमक रही थी। आर्यन ने उसे उठा लिया। जैसे ही उसने खंजर को हाथ में लिया, उसके पूरे शरीर में ठंडक की लहर दौड़ गई।

"क्या यह खंजर अभी भी जीवित है?" मीरा ने डरते हुए पीछे हटते हुए पूछा।

"नहीं, मीरा, यह हथियार अब शापित नहीं है, बल्कि इस किले के विनाश और हमारी विजय का प्रतीक है। इसे हमारे पास ही रहने दो, ताकि भविष्य में कोई भी इस शाप से प्रभावित न हो," आर्यन ने कटार को बड़े करीने से कपड़े में लपेटकर अपने पास रख लिया।

विश्वनाथ राव की मुक्ति: एक भावुक क्षण

अचानक, ढह चुके किले के केंद्र से सफेद, चमकदार धुआँ उठता हुआ दिखाई दिया। धुएँ ने धीरे-धीरे एक मानव आकृति का रूप ले लिया। यह विश्वनाथराव थे! आर्यन के पिता। लेकिन बीस साल पहले जिस पीड़ा में

उनकी मृत्यु हुई थी, वह अब उनके चेहरे पर नहीं थी। इसके बजाय, उनके चेहरे पर एक प्रसन्न और शांत मुस्कान थी। उनकी आँखों से एक दिव्य आभा निकल रही थी।

आर्यन के पैर कांपने लगे और वह घुटनों के बल बैठ गया। "पापा..." बस इतना ही वह कह पाया। उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।

विश्वनाथराव की आत्मा ने आर्यन को आशीर्वाद देने के लिए अपना हाथ उठाया। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस आर्यन की ओर एक नज़र डाली—उनकी नज़र कह रही थी, 'पुत्र, तुमने कर दिखाया। तुमने पीढ़ियों से अपने परिवार पर लगे काले धब्बे को मिटा दिया है।' कुछ ही क्षणों में, वह प्रकाश धीरे-धीरे आकाश में विलीन हो गया। अपने जीवन में पहली बार आर्यन को अहसास हुआ कि उसके पिता अब सचमुच मुक्त और शांत हैं।

रुद्रपुर गांव के ग्रामीणों का आगमन

किले के ढहने की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि रुद्रपुर गाँव के लोग, जो इतने वर्षों से किले की छाया से भी डरते थे, अब हाथों में मशालें, लाठियाँ और लालटेन लेकर इकट्ठा हो गए। विश्वनाथराव को आखिरी बार देखने वाले बूढ़े ग्राम सरपंच सबसे आगे थे।

सामने का दृश्य देखकर सभी ग्रामीण स्तब्ध रह गए। 'शापित किला', जिसका नाम सुनते ही लोग कांप उठते थे, अब वहां नहीं था। "क्या हुआ? देशमुख का किला रातोंरात धूल में मिल गया?" एक ग्रामीण ने हैरानी से फुसफुसाते हुए पूछा।

सरपंच आर्यन के पास आया। उसने आर्यन के शरीर पर घाव और उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प देखा। वह सब कुछ समझ गया। "पुत्र, तुमने वह कर दिखाया जो तुम्हारे पिता और तुम्हारे पूर्वज नहीं कर सके। तुमने इस गाँव को रक्त के भयानक अभिशाप से मुक्त कर दिया। आज से रुद्रपुर की रातें डरावनी नहीं रहेंगी। आज गाँव ने सचमुच स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है।"

गांव वालों ने आर्यन और मीरा को प्यार से सहारा दिया। उन्हें गांव के मंदिर ले जाया गया। वहां उन्हें ठंडा पानी, भोजन और घावों पर लगाने के लिए जड़ी-बूटी दी गई। रुद्रपुर का इलाका, जो हमेशा सुनसान और उदास लगता था, अब जीवंत हो उठा।

खाली कागज का आखिरी पन्ना और एक नया रहस्य

विश्राम करते समय आर्यन की नज़र उसकी जेब में रखे 'खाली कागज़' पर पड़ी। उसने वह कागज़ निकाला जिस पर उसने अब तक मृत्यु का संदेश लिखा था। पहले तो वह बिल्कुल खाली था, लेकिन अब उस पर सुनहरे अक्षरों में कुछ धीरे-धीरे उभरने लगा था।

मीरा भी उत्सुकतावश पास आ गई। दोनों ने मिलकर पढ़ा:

"इतिहास भले ही समाप्त हो गया हो, लेकिन नियति का खेल रुकता नहीं। जो रक्त की विरासत से दुनिया को बचाता है, वही सच्चा उद्धारकर्ता है। मृत्यु का संदेश अब मुक्ति का संदेश बन गया है, लेकिन याद रखना... कौआ अब भी टीले पर बैठा है।"

इसे पढ़ने के बाद, कागज अचानक हवा में गायब हो गया और प्रकाश के एक छोटे से बिंदु में बदल गया जो खिड़की से बाहर उड़ गया।

कौवे का घेरा: एक नया डर

शाम का समय था। आर्यन और मीरा गांव के द्वार पर खड़े थे। वे शहर में अपने घर लौटना चाहते थे। लेकिन जैसे ही वे जाने लगे, आर्यन की नज़र एक बार फिर महल की राख पर पड़ी। वहां कुछ अलग हो रहा था।
उसने ज़मीन पर एक छोटी सी चमकती हुई वस्तु देखी। उसने उसे उठा लिया। वह एक पुरानी अंगूठी थी। अंगूठी पर देशमुख परिवार का प्रतीक चिन्ह नहीं था, बल्कि हीरे की तरह चमकती आँखों वाला एक कौआ बना हुआ था।
आर्यन का दिल बैठ गया। वह रत्ना का इतिहास जानता था, लेकिन इस 'कौवे' का रहस्य क्या था? रघुनाथराव की डायरी में कहीं भी इसका ज़िक्र नहीं था। इसका मतलब था कि रत्ना महज़ एक बहाना थी, पर्दे के पीछे कोई था जिसने उसे शक्ति दी या उससे ये सब करवाया।

एक यात्रा का अंत या एक नई शुरुआत?

"क्या हुआ, आर्यन? क्या हमें चले जाना चाहिए?" मीरा ने उसका हाथ पकड़ते हुए पूछा।
आर्यन ने अंगूठी को मुट्ठी में कसकर पकड़ा और जेब में रख लिया। "हाँ, मीरा, हमें चलना चाहिए। लेकिन हमारी यात्रा अभी यहीं खत्म नहीं हुई है। यह तो बस एक बड़े युद्ध का अंत था। असली लड़ाई तो अब शुरू होने वाली है। जिस शक्ति ने मेरे परिवार को तबाह किया, वह कहीं न कहीं अभी भी जीवित है।"
मीरा के मन में एक बार फिर भय घर कर गया, लेकिन उसे आर्यन पर भरोसा था। दोनों रुद्रपुर के द्वार से बाहर निकल आए। उनके पीछे महल की राख अब शांत थी, लेकिन हवा के एक झोंके के साथ, एक काला कौआ राख के ढेर पर आकर बैठ गया और आर्यन की चलती हुई कार की ओर तीखी और क्रूर निगाहें डालीं।

अध्याय 9: कौवे की अंगूठी और काले जादू की उत्पत्ति

रुद्रपुर गेट से आर्यन की कार शहर की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी, लेकिन आर्यन का मन अभी भी उस राख के ढेर में अटका हुआ था। उसकी जेब में वह भारी अंगूठी थी, जिसका स्पर्श बर्फ़ की तरह ठंडा था। गाड़ी चलाते समय, उसका ध्यान बार-बार अपनी जेब पर जा रहा था। मीरा खिड़की से बाहर देख रही थी, शायद उस भयानक रात की याद को मिटाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन खामोशी कहीं ज़्यादा कुछ कह रही थी।

अंगूठी की पहली छाप

"आर्यन, क्या तुम ठीक हो? तुम कुछ बोल नहीं रहे हो," मीरा ने चिंता से पूछा।
आर्यन ने गाड़ी रोकी। उसने अपनी जेब से अंगूठी निकाली। अंगूठी काले रंग की थी, जिस पर एक सुंदर नक्काशीदार कौआ बना हुआ था। कौए की आँखें हीरों की तरह चमक रही थीं, लेकिन वे साधारण हीरे नहीं थे; ऐसा लग रहा था मानो वे जीवित हों।

“ये अंगूठी... मुझे उस किले के खंडहरों में मिली थी। मीरा, इस पर देशमुख परिवार का चिन्ह नहीं है। ये कुछ अलग है,” आर्यन ने अंगूठी को रोशनी में उठाया। अचानक, अंगूठी में बनी कौवे की आंखें लाल हो गईं और आर्यन के सिर में तेज दर्द होने लगा। कुछ क्षणों के लिए, उसे अतीत की एक धुंधली झलक दिखाई दी – एक अंधेरी रात, एक कब्रिस्तान और वहां बैठा एक तांत्रिक!

वह तकनीशियन कौन था?

आर्यन ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। "मीरा, रत्ना को उसकी शक्ति किसी और ने दी थी। रघुनाथराव तो बस एक माध्यम थे। रत्ना की बलि के बाद जिस शक्ति ने उसे इस महल में कैद कर रखा है, वह इस अंगूठी में छिपी है।"

अंगूठी के अंदर की तरफ पुरानी, टूटी-फूटी लिखावट में कुछ खुदा हुआ था। आर्यन ने ध्यान से देखा— 'कपालिक रुद्र'। जैसे ही उसने नाम पढ़ा, हवा का एक तेज़ झोंका आया और एक कौआ बाहर से कार की खिड़की से ज़ोर से टकराया। शीशा तो नहीं टूटा, लेकिन कौए का खून शीशे पर फैल गया।

मीरा चिल्लाई, "आर्यन, क्या हो रहा है? हम उस महल से बाहर आ चुके हैं, है ना? फिर यह परछाई हमारा पीछा क्यों कर रही है?"

शहर में आगमन और पुस्तकालय की खोज

वे शहर में अपने घर पहुँचे, लेकिन जैसे ही उन्होंने दरवाजे के अंदर कदम रखा, आर्यन को एहसास हुआ कि कुछ बदल गया है। घर की छत पर सैकड़ों कौवे बैठे थे, जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। वे सभी चुप थे, लेकिन उनकी निगाहें आर्यन की जेब पर टिकी थीं।

आर्यन ने निश्चय किया कि जब तक वह इस अंगूठी का रहस्य नहीं जान लेता, उसे शांति नहीं मिलेगी। उसने अपने परिचित पुरातत्वविद प्रोफेसर कुलकर्णी से मिलने का निर्णय लिया। कुलकर्णी प्राचीन राजवंशों के इतिहास और तांत्रिक अनुष्ठानों के ज्ञाता थे।

प्रोफेसर कुलकर्णी का चौंकाने वाला खुलासा

अगली सुबह आर्यन कुलकर्णी के घर पहुँचा। उसने अंगूठी उनके सामने रख दी। अंगूठी देखते ही प्रोफेसर कुलकर्णी का चेहरा पीला पड़ गया। उन्होंने अपना चश्मा ठीक किया और आवर्धक लेंस की सहायता से अंगूठी की जाँच करने लगे।

"आर्यन, यह तुम्हें कहाँ से मिला?" कुलकर्णी की आवाज कांप रही थी।

"रुद्रपुर के उस खंडहर किले में," आर्यन ने उत्तर दिया।

"बाला, यह कोई साधारण अंगूठी नहीं है। इसे 'यम्पाश अंगूठी' कहते हैं। यह कपालिका संप्रदाय के उन तांत्रिकों की है जो अमरत्व के लिए मानव बलि देते हैं। 18 वीं शताब्दी में रुद्रानंद नाम का एक भयानक तांत्रिक था। उसने यह अंगूठी रघुनाथराव देशमुख को दी थी। उसने कहा था कि जब तक यह अंगूठी देशमुख

वंश में रहेगी, उसकी शक्ति बनी रहेगी। लेकिन बदले में, इस अंगूठी के लिए रत्नों के समान कई जीवों का बलिदान देना होगा।"

भूख का छल्ला

प्रोफेसर ने आगे बताया कि यह अंगूठी खून की प्यासी है। "रत्ना की आत्मा भले ही मुक्त हो गई हो, लेकिन इस अंगूठी में कैद काला जादू अभी भी जीवित है। रत्ना केवल इस अंगूठी की रक्षक थी। अब जब वह मुक्त हो गई है, तो इस अंगूठी को एक 'नए रक्षक' की आवश्यकता है। और आर्यन... वह अंगूठी तुम्हें चुन रही है!"

आर्यन कांप उठा। उसे याद आया कि महल से निकलते समय उसका पैर फंस गया था और उसका खून जमीन पर फैल गया था। उसी खून की वजह से यह अंगूठी जागृत हुई थी।

"अगर तुमने इस अंगूठी को नष्ट नहीं किया, तो यह धीरे-धीरे तुम्हें पागल कर देगी। जिस तरह तुम्हारे पूर्वज मरने के बाद पागल हो गए थे, वैसे ही तुम भी हो जाओगे," प्रोफेसर ने चेतावनी दी।

कौवों की घेराबंदी

तभी प्रोफेसर के घर की खिड़कियाँ ज़ोर से बजने लगीं। बाहर कौवे इतनी ज़ोर से चिल्ला रहे थे कि आपस में बातचीत सुनना मुश्किल हो रहा था। अचानक, एक बड़ा कौवा खिड़की तोड़कर अंदर आ गया और सीधे अंगूठी पर झपटा। आर्यन ने उसे धक्का देकर हटा दिया, लेकिन कौवे ने आर्यन के हाथ पर गहरा घाव कर दिया।

जैसे ही आर्यन का खून अंगूठी पर गिरा, अंगूठी में बैठा कौआ मानो जीवित हो उठा। उसके पंख फड़फड़ाने लगे और पूरे कमरे में एक भयानक दुर्गंध फैल गई।

"आर्यन, यहाँ से निकल जाओ! इस घेरे ने अब खुद की रक्षा करना सीख लिया है!" प्रोफेसर चिल्लाया।

एक नया दुश्मन: 'द ब्लैक शैडो'

आर्यन और मीरा वहां से चले गए, लेकिन अब उन्हें एहसास हुआ कि दुश्मन सिर्फ एक आत्मा नहीं, बल्कि एक पूरा संप्रदाय था। सड़क पर चलते हुए उन्हें लगा कि हर कौआ उन्हें देख रहा है। अंगूठी अब आर्यन के शरीर का हिस्सा बनने की कोशिश कर रही थी।

उस रात जब आर्यन सोने की कोशिश कर रहा था, उसने सपने में वही 'खाली कागज' देखा। लेकिन इस बार उस कागज पर कोई संदेश नहीं था, बल्कि एक नक्शा था। उस जगह का नक्शा जहाँ से इस अंगूठी की उत्पत्ति हुई थी—'कालभैरव पर्वत'।

"मुझे वहां जाना ही होगा, मीरा। इस घेरे का अंत वहीं है," आर्यन ने दृढ़ता से कहा।

लेकिन उसे यह नहीं पता था कि कालभैरव पर्वत पर केवल एक अंगूठी ही नहीं, बल्कि रत्न से हज़ार गुना अधिक शक्तिशाली रुद्रानंद तांत्रिक समाधि की अवस्था में उसका इंतज़ार कर रहे थे। अब इस 7000 शब्दों की कहानी में असली 'भयानक' घटना शुरू होने वाली थी। मृत्यु का संदेश अब केवल महल तक ही सीमित नहीं था, वह अब एक प्राचीन श्राप की खोज में निकल पड़ा था।

अध्याय 10: कालभैरव पर्वत पर चढ़ाई और रक्त का निशान

शहर की भागदौड़ पीछे छूट चुकी थी, और आर्यन की कार अब एक ऐसे रास्ते पर चल रही थी जहाँ केवल सूखे पेड़ और असीम सन्नाटा था। कालभैरव पर्वत... यह कोई साधारण पर्वत नहीं था, बल्कि इस क्षेत्र का सबसे भयानक और रहस्यमय स्थान था। बुजुर्गों के अनुसार, यहाँ पहुँचने पर दिशा का पता लगाना मुश्किल हो जाता है और हवा भी भारी लगने लगती है।

आर्यन की दाहिनी उंगली में फंसी कौवे वाली अंगूठी अब उसके शरीर का हिस्सा बन चुकी थी। उसने कई बार साबुन और तेल से भी उसे निकालने की कोशिश की, लेकिन अंगूठी उसके मांस में इतनी गहराई तक धंस गई थी कि ऐसा लगता था मानो वह उसकी हड्डियों से जुड़ गई हो। उंगली सूजी हुई थी और अंगूठी में बने कौवे की आंखें कभी-कभी झपकती थीं, मानो आर्यन को रास्ता दिखा रही हों।

पर्वत की घेराबंदी और उसकी रहस्यमय शक्ति

"आर्यन, क्या हमें वापस चलना चाहिए? मुझे बहुत डर लग रहा है। कालभैरव पर्वत की छाया हम पर अच्छी नहीं लग रही है," मीरा ने कांपती हुई आवाज़ में पूछा। कार की खिड़की से बाहर देखते हुए, उसे केवल ऊँची चोटियाँ और वहाँ बैठे सैकड़ों कौवे दिखाई दे रहे थे। कौवे चिल्ला नहीं रहे थे, बल्कि एक लय में अपने सिर हिला रहे थे।

आर्यन स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़े हुए था। "नहीं, मीरा, अब वापसी का रास्ता बंद है। यह अंगूठी मुझे अपनी ओर खींच रही है। अगर मैं इस पहाड़ की चोटी तक नहीं पहुँचा, तो मेरा शरीर धीरे-धीरे इस अंगूठी को निगल जाएगा। मुझे इस रहस्य को खत्म करना ही होगा।"

गाड़ी एक संकरे मोड़ पर पहुँची और अचानक इंजन बंद हो गया। आर्यन ने उसे दोबारा चालू करने की कोशिश की, लेकिन गाड़ी आगे नहीं बढ़ी। आगे सड़क खत्म हो चुकी थी और सिर्फ़ एक पगडंडी शुरू हो रही थी, जो सीधे पहाड़ की अंधेरी चोटी की ओर जा रही थी।

रोमांचक यात्रा

आर्यन और मीरा कार से बाहर निकले। जैसे ही वे बाहर निकले, उन्हें ज़मीन के नीचे कुछ हिलता हुआ महसूस हुआ। आसपास के पेड़ों की शाखाएँ उन्हें इंसानी हाथों की तरह लग रही थीं, मानो उन्हें रोकने की कोशिश कर रही हों।

रास्ते में जगह-जगह पत्थर की पुरानी मूर्तियाँ बिखरी पड़ी थीं। उन मूर्तियों के चेहरे विकृत थे और उन पर खून के पुराने धब्बे लगे हुए थे। आर्यन ने सपने में जो 'कोरा कागज' देखा था, वह अब उसकी आँखों के सामने फिर से नाचने लगा। वातावरण में मंत्रोच्चार की एक अजीब सी ध्वनि गूंजने लगी।

"रुद्राय...भद्राय...कालभैरवाय...नमः।"

लेकिन यह मंत्र भक्ति का नहीं था, यह किसी से बलिदान मांगने के लिए जपा जा रहा था। आर्यन का हाथ अब भारी हो गया था। उसे महसूस हुआ कि उसकी उंगलियां काली पड़ने लगी हैं। घेरे में बैठा कौआ अब धीमी-धीमी आवाज़ निकालने लगा।

उस रात कब्रिस्तान में

पहाड़ की आधी चढ़ाई पर पहुँचते ही उन्हें एक खुला मैदान दिखाई दिया। वहाँ एक पुराना कब्रिस्तान था। वहाँ कोई चिता जल नहीं रही थी, लेकिन चारों ओर राख बिखरी हुई थी। राख में सैकड़ों खाली कागज़ पड़े थे। लेकिन ये कागज़ साधारण नहीं थे; प्रत्येक पर एक मृत व्यक्ति का नाम और उसकी मृत्यु की तिथि लिखी हुई थी।

आर्यन की नज़र कोने में पड़े एक कागज़ पर पड़ी। उस पर उसका अपना नाम लिखा था—'आर्यन विश्वनाथराव देशमुख'... और उसके नीचे तारीख लिखी थी, '31 मार्च, 2026'—यानी आज की तारीख!

"आर्यन, इसे देखो!" मीरा चिल्लाई।

उस कब्रिस्तान के बीचोंबीच एक विशाल पत्थर की समाधि थी। उस समाधि पर एक बूढ़ा व्यक्ति बैठा था। उसके बाल जूड़े में बंधे थे, शरीर पर केवल राख थी और गले में कौवों की खोपड़ियों का हार था। वह उस अंगूठी का असली मालिक, 'कपालिक रुद्रानंद' ही था! लेकिन यह कहना मुश्किल था कि वह जीवित था या मृत्यु के बाद वहाँ बैठा था।

रुद्रानंद का रहस्योद्घाटन

तांत्रिक ने अपनी आँखें खोलीं। उसकी आँखें हीरे की तरह चमक रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे अंगूठी में कौआ चमक रहा था। वह हँसा, और उसकी हँसी की गूँज पहाड़ों की चोटियों पर गूंज उठी।

"आर्यन का स्वागत है... देशमुख वंश के अंतिम उत्तराधिकारी! तुमने भले ही रत्न का श्राप तोड़ दिया हो, लेकिन इस अंगूठी के फंदे को नहीं तोड़ पाओगे। यह अंगूठी तुम्हें यहाँ इसलिए लाई है क्योंकि इसे एक बार फिर जीवित शरीर चाहिए। तुम ही रत्न की विरासत को आगे बढ़ाओगे!"

रुद्रानंद ने अपना हाथ हवा में उठाया और अचानक श्मशान की राख हवा में उड़ने लगी। राख छोटे-छोटे कौवों में बदल गई और उन्होंने मीरा को घेर लिया। मीरा सांस नहीं ले पा रही थी।

"उसे छोड़ दो! मुझसे जो चाहो ले लो!" आर्यन चिल्लाया।

"मुझे तुम्हारा शरीर चाहिए, आर्यन! जिस क्षण तुम इस पर्वत की चोटी पर स्थित कालभैरव मंदिर में प्रवेश करोगे, तुम्हारी आत्मा इस घेरे में कैद हो जाएगी और मेरी आत्मा तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर जाएगी। तब मैं एक बार फिर इस दुनिया पर राज करूंगा!" रुद्रानंद ने क्रूरता से कहा।

जीवन और मृत्यु का खेल

आर्यन ने कपड़े में लिपटी अपनी 'छुरी' निकाली। छुरी निकलते ही रुद्रानंद एक पल के लिए पीछे हट गया। "रघुनाथराव की छुरी! क्या इसमें अभी भी रक्त की शक्ति है? लेकिन तुम मेरी तांत्रिक शक्ति के सामने नहीं टिक पाओगे!"

रुद्रानंद ने एक खाली कागज पर कुछ लिखा और उसे हवा में उड़ा दिया। कागज तलवार की गति से आर्यन की ओर उड़ा। आर्यन ने कटार को क्षैतिज रूप से पकड़ रखा था, लेकिन कागज का एक कोना उसके गाल पर लगा, जिससे गहरा घाव हो गया। खून की एक बूंद जमीन पर गिरते ही पहाड़ से एक बड़ा पत्थर नीचे गिर गया।

अब आर्यन को समझ आ गया था कि यह महज़ भूतों का खेल नहीं, बल्कि एक प्राचीन काला जादू था। अगर उसे मीरा को बचाना था, तो उसे शिखर पर स्थित कालभैरव मंदिर तक पहुँचना ही होगा। केवल वहीं पर उस अंगूठी को नष्ट किया जा सकता था।

अंतिम चढ़ाई की शुरुआत

"मीरा, चोटी की ओर दौड़ो! मुझे मत रोको!" आर्यन ने मीरा को धक्का दिया और वे चोटी की ओर दौड़ने लगे। उनके पीछे तांत्रिक रुद्रानंद जोर-जोर से मंत्रों का जाप कर रहे थे और उनके हजारों कौवे उनका पीछा कर रहे थे।

रात का अंधेरा अब और भी गहरा हो गया था। गरज और बिजली की गड़गड़ाहट में कालभैरव पर्वत की चोटी खून की तरह लाल दिख रही थी। यह 7000 शब्दों की इस कहानी का सबसे बड़ा और सबसे भयानक 'चरमोत्कर्ष' था। हर कदम हमें मौत के और करीब ले जा रहा था।

आर्यन के हाथ में मौजूद अंगूठी अब उसकी कलाई तक फैल चुकी थी। उसे एहसास हो रहा था कि उसका खुद पर नियंत्रण कमजोर पड़ रहा है। क्या वह खुद को रूपांतरित होने से रोक पाएगा? या रुद्रानंद तांत्रिक एक बार फिर जीवित होकर दुनिया को खतरे में डाल देगा?

अध्याय 11: कालभैरव मंदिर में रक्त अनुष्ठान

कालभैरव पर्वत की चोटी किसी दैत्य के हाथ की तरह आकाश की ओर उठी हुई थी। गरज और बिजली के बीच, सामने कालभैरव मंदिर दिखाई दे रहा था। यह मंदिर पत्थर का नहीं बना था, बल्कि काले पत्थर पर उकेरी गई एक प्राचीन कृति थी। मंदिर के स्तंभ मानव खोपड़ियों से सजे हुए थे, और गुफा से एक धुंधली, लाल रोशनी निकल रही थी।

जब आर्यन और मीरा मंदिर की दहलीज पर पहुँचे, तब तक आर्यन का दाहिना हाथ पूरी तरह काला पड़ चुका था। कौवे की अंगूठी अब उसकी कलाई की नसों में समा चुकी थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके शरीर में खून की जगह काली स्याही बह रही हो।

मंदिर में भयावह दृश्य

गुफा में कदम रखते ही उन्होंने अपने सामने एक विशाल यज्ञ देखा। उस यज्ञ में लकड़ी नहीं जल रही थी, बल्कि सैकड़ों कोरे कागज जल रहे थे। कागजों के धुएं से इंसानों की चीखें सुनाई दे रही थीं। वही कपालिक रुद्रानंद यज्ञ के सामने बैठे थे। लेकिन अब उनका रूप और भी भयावह हो गया था। उनका शरीर पारदर्शी हो गया था और उनकी छाती के बीचोंबीच वही कौवे की अंगूठी हवा में तैर रही थी।

"आर्यन... तुम आ गए! तुम्हारा समय समाप्त हो गया है। अब यह शरीर मेरा होगा!" रुद्रानंद की आवाज मंदिर की दीवारों में गूंज उठी।

मीरा आर्यन को बचा रही थी, लेकिन अचानक मंदिर के भारी पत्थर के दरवाजे ज़ोर से बंद हो गए। दीवारों से खून बहने लगा और उस खून से ज़मीन पर एक बड़ी सी मशीन जैसी आकृति बन गई। आर्यन उस मशीन के बीचोंबीच फंस गया।

बलिदान की प्रक्रिया

रुद्रानंद ने मंत्र का जाप शुरू किया। यज्ञ की अग्नि नीली हो गई। "इस अंगूठी को अब केवल एक ही चीज़ की आवश्यकता है - देशमुख वंश के अंतिम उत्तराधिकारी का हृदय! जिस क्षण तुम्हारा हृदय धड़कना बंद होगा, उसी क्षण मेरी आत्मा तुम्हारे शरीर में प्रवेश कर जाएगी और मैं पुनः अमर हो जाऊंगा!"

आर्यन को अपने दिल की धड़कन धीमी महसूस होने लगी। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। अंगूठी उसकी उंगली से उतरकर हवा में उसके सीने की ओर गिरने लगी। अंगूठी में बने कौवे ने अपने पंख फैला दिए थे और उसकी आँखें खून की तरह लाल हो गई थीं।

"आर्यन! अपनी आँखें खुली रखो! मुझे छोड़कर मत जाओ!" मीरा चिल्लाई। उसने यज्ञ स्थल के पास पड़ा एक भारी पत्थर उठाया और रुद्रानंद की ओर फेंका, लेकिन पत्थर रुद्रानंद के शरीर से ऐसे आर-पार हो गया, मानो वह कोई भूत हो।

छुरी की शक्ति और पिता की आवाज

आर्यन के हाथ में जो 'खंजर' थाम रखा था, वह अचानक गर्म हो गया। खंजर की मूठ पर जड़े हीरे चमकने लगे। उसी समय आर्यन के कानों में एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी— "पुत्र, भय को अपना हथियार बना ले। रक्त रक्त को नहीं मार सकता, परन्तु बलिदान अमर है।"

यह आवाज उसके पिता विश्वनाथराव की थी। आर्यन को एहसास हुआ कि यह अंगूठी और रुद्रानंद केवल 'भय' और 'वासना' पर ही जीवित हैं। यदि वह भय का त्याग कर दे, तो उनकी शक्ति समाप्त हो जाएगी।

आर्यन ने अपनी बची हुई शक्ति को इकट्ठा किया और कटार को सीधे अपने हाथ में मौजूद अंगूठी के घाव पर मारा। जैसे ही उसका शुद्ध रक्त कटार के स्पर्श से छूआ, कटार सोने की तरह चमकने लगी।

अंतिम संघर्ष: तांत्रिक युद्ध

"नहीं! तुमने क्या किया?" रुद्रानंद चिल्लाया।

आर्यन ने कटार हवा में उठाई और उसे तैरते हुए घेरे के ठीक बीचोंबीच घोंप दिया। पल भर में मंदिर का वातावरण बदल गया। यज्ञ से निकली नीली अग्नि अब भयंकर रूप धारण करके पूरे मंदिर में फैल गई। मंदिर की छत पर बैठे सैकड़ों कौवे राख में तब्दील होने लगे।

रुद्रानंद की आत्मा अब कांपने लगी। "मेरी सौ वर्षों की तपस्या... एक खाली कागज पर खून से समाप्त हुई? नहीं!"

आर्यन चिल्लाया, "यह कागज खाली नहीं है, रुद्रानंद! इस पर मेरे पिता का प्यार और मेरे परिवार का बलिदान लिखा है! तुम्हारा अंत अब निश्चित है!"

आर्यन ने अपनी कटार से अंगूठी पर अंतिम प्रहार किया। अंगूठी दो टुकड़ों में टूट गई और उसमें से काला धुआँ निकला जो सीधे यज्ञ में विलीन हो गया। रुद्रानंद की आत्मा धुएँ की तरह विलीन हो गई और उनका अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया।

मंदिर का विनाश और मुक्ति

जैसे ही अंगूठी नष्ट हुई, मंदिर की दीवारें ढहने लगीं। काला पत्थर अब सफेद हो गया था। खून बहना बंद हो गया था, और बाहर गरजना थम गई थी और शांत चांदनी छा गई थी।

आर्यन ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका दाहिना हाथ, जो काला पड़ गया था, अब धीरे-धीरे अपने सामान्य रंग में लौट रहा था। अंगूठी के टुकड़े अब ज़मीन पर पड़े साधारण पत्थरों जैसे दिख रहे थे।

"आर्यन! क्या तुम ठीक हो?" मीरा दौड़कर उसके पास गई और उसे गले लगा लिया।

"हां, मीरा... अब सब कुछ सचमुच खत्म हो गया है। मौत का वो संदेश हमेशा के लिए मिट गया है," आर्यन ने थकी हुई लेकिन संतुष्ट आवाज में कहा।

कोले कागज का रहस्य

उन्होंने बलिदान की राख में पड़ा एक आखिरी कागज़ का टुकड़ा देखा। आर्यन ने उसे उठाया। कागज़ अब पूरी तरह से सफेद और साफ था। उस पर न कोई नाम था, न कोई तारीख।

आर्यन ने कागज फाड़कर हवा में फेंक दिया। कागज पर्वत की घाटी में सफेद तितलियों की तरह बिखर गया। काले भैरव पर्वत की छाया अब हमेशा के लिए गायब हो गई थी।

भोर में एक नई शुरुआत

जब वे पहाड़ से नीचे उतरे, तो सूरज उग रहा था। पहाड़ अब डरावना नहीं लग रहा था, बल्कि प्रकृति का एक सुंदर हिस्सा लग रहा था। आर्यन ने पीछे मुड़कर देखा, और मंदिर की जगह केवल एक पुरानी पहाड़ी थी, मानो वहाँ कभी कोई मंदिर था ही नहीं।

"अब हमें कहाँ जाना चाहिए, आर्यन?" मीरा ने पूछा।

"हमारे घर में... जहाँ अब किसी को मौत का डर नहीं रहेगा। जहाँ अब किसी को खाली कागज देखकर डर नहीं लगेगा," आर्यन ने उसका हाथ थाम लिया।

इस कहानी के अंत में, आर्यन को एक बात पता चली—इतिहास को भुलाया जा सकता है, लेकिन अब यह सुनिश्चित करना उसकी ज़िम्मेदारी थी कि ऐसा दोबारा कभी न हो। उसने खंजर को एक गहरी नदी में फेंक दिया, ताकि वह फिर कभी किसी के हाथ में न पड़े।

अध्याय 12: राख में मुक्ति और शांति का सूर्योदय

कालभैरव पर्वत का विशाल इलाका अब बहुत पीछे छूट चुका था। सुबह की ओस की बूँदें आर्यन की कार की खिड़कियों से नीचे लुढ़क रही थीं। कार में सन्नाटा छाया हुआ था, लेकिन यह सन्नाटा माघा के साथ वाले भयानक सन्नाटे से अलग था। यह सन्नाटा 'मुक्ति' का था। मीरा ने अपना सिर आर्यन के कंधे पर टिका रखा था। उसकी आँखें बंद थीं, लेकिन उसके चेहरे पर अब डर का कोई निशान नहीं था।

आर्यन ने स्टीयरिंग व्हील पर रखे अपने दाहिने हाथ को देखा। जहाँ कौवे की अंगूठी उसके शरीर में धंसी थी, वहाँ अब केवल एक हल्का गुलाबी निशान बचा था। वह निशान उसे हमेशा याद दिलाता रहेगा कि कैसे उसने खुद को और अपने प्यार को मौत के मुंह से बचाया था।

शहर में वापसी: एक नई पहचान

जब वे शहर में अपने घर पहुँचे, तो सुबह के नौ बज रहे थे। आस-पास के लोग हमेशा की तरह अपने कामों में व्यस्त थे। किसी को भी इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि पिछले 48 घंटों में इन दोनों युवकों ने किस भयानक यातना को सहा था। आर्यन घर की दहलीज पर कदम रखते ही एक पल के लिए रुक गया। उसे डर था कि कहीं उसकी जेब से 'काला कागज़' फिर से न निकल आए।

लेकिन घर में प्रवेश करते ही उसने महसूस किया कि घर का वातावरण अब अधिक खुशनुमा हो गया है। खिड़की से आती धूप अब स्वच्छ और चमकदार लग रही थी। उसने दीवार पर अपने पिता विश्वनाथराव की तस्वीर देखी। उस तस्वीर में आज एक अलग ही चमक थी। ऐसा लग रहा था मानो विश्वनाथराव सचमुच उस तस्वीर के माध्यम से आर्यन को देख रहे हों और मुस्कुरा रहे हों।

खंजर का अंत और प्रायश्चित

आर्यन ने वह कटार निकाली जिससे रत्ना का हृदय और रुद्रानंद की अंगूठी तोड़ी गई थी। कटार अब कुंद हो चुकी थी। आर्यन ने कहा, "मीरा, अब इस कटार को अपने पास रखना उचित नहीं है। भले ही अब इसमें शक्ति न हो, लेकिन कई पीढ़ियों का खून इस पर बहा है।"

उस दोपहर वे शहर के बाहर एक पवित्र नदी के किनारे गए। आर्यन ने कटार को कपड़े में लपेटकर नदी की गहरी धारा में फेंक दिया। जैसे ही कटार पानी में गई, एक छोटा सा बुलबुला दिखाई दिया और वह हमेशा के लिए तल में डूब गई।

"देशमुख का आखिरी सबूत भी अब खत्म हो गया है," मीरा ने राहत की सांस ली।

एक वर्ष बाद: रुद्रपुर का बदला हुआ चेहरा

समय बहुत जल्दी बीत गया। एक साल बीत गया। आर्यन और मीरा की शादी हो गई और उन्होंने एक बार रुद्रपुर जाने का फैसला किया। लेकिन इस बार वे डर के मारे नहीं, बल्कि कृतज्ञता के कारण जा रहे थे।

रुद्रपुर के द्वार पर पहुँचते ही वे दंग रह गए। जहाँ कभी 'शापित किला' हुआ करता था, वहाँ ग्रामीणों ने एक सुंदर उद्यान बना दिया था। किले की राख अब उपजाऊ मिट्टी में बदल गई थी, जहाँ लाल गुलाब के फूल लहरा रहे थे। ग्रामीणों ने उस उद्यान का नाम 'विश्वनाथ उद्यान' रखा था।

उन्हें देखकर सरपंच प्रसन्नता से आगे आया और बोला, “बेटा, तुम्हारे आने से इस गाँव का डर हमेशा के लिए खत्म हो गया है। अब बच्चे रात में बाहर खेलते हैं। कोई उस ‘कागज के टुकड़े’ को नहीं देखता। तुमने इस गाँव को नया जीवन दे दिया है।”

पुस्तकालय की स्थापना

आर्यन ने गांव के बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी सारी संपत्ति और जमीन दान कर दी। उन्होंने वहां एक छोटी सी लाइब्रेरी भी बनवाई। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए आर्यन ने भावुक होकर कहा, "जिन कागजों ने मेरे परिवार को मृत्यु का संदेश दिया, उन्हीं कागजों पर अब ये बच्चे अपना भविष्य लिखेंगे।"

उसने पुस्तकालय की एक दीवार पर एक खाली, सफेद कागज का टुकड़ा फ्रेम करके लगा रखा था। लेकिन उसके नीचे उसने लिखा था:

"भविष्य कागज़ पर नहीं, आपके कार्यों में निहित है। यह कागज़ खाली है, क्योंकि आपको अपनी कहानी खुद लिखनी है।"

मीरा की डायरी और अंतिम शब्द

उस रात होटल में ठहरते हुए मीरा ने डायरी लिखना शुरू किया। उसने यात्रा के हर रोमांच, रत्ना के दुख, विश्वनाथराव के बलिदान और आर्यन के दृढ़ संकल्प को शब्दों में बयां किया।

"आर्यन, तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या रुद्रानंद तांत्रिक विद्या का दौर सचमुच खत्म हो गया है?" मीरा ने पूछा।

आर्यन ने खिड़की से बाहर देखा। बाहर चाँद चमक रहा था। एक ऊँचे पेड़ पर एक कौआ बैठा था, लेकिन अब वह स्थिर था। उसने आर्यन को देखा और चुपचाप उड़ गया।

"मीरा, दुनिया में हमेशा बुरी ताकतें मौजूद रहती हैं। लेकिन जब तक प्रेम, त्याग और सत्य की शक्ति हमारे साथ है, कोई काला जादू हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकता। इतिहास भले ही समाप्त हो गया हो, लेकिन सबक हमेशा रहेगा," आर्यन ने मीरा का हाथ पकड़ते हुए कहा।

कहानी का निष्कर्ष

'ब्लैंक पेपर: ए मैसेज ऑफ डेथ' कहानी की शुरुआत एक शापित हवेली से हुई और अंत एक पवित्र बगीचे में हुआ। आर्यन ने अपने पिता की विरासत को पूरा किया। उसने न केवल अपनी जान बचाई, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही अंधकार की जंजीर को भी तोड़ दिया।

रुद्रपुर के जंगलों में अब हवा चल रही थी। जिस ज़मीन पर कभी खून सड़ा करता था, अब वहाँ मोगरा की गंध फैली हुई थी। वह 'कोरा कागज़' अब किसी के जीवन का हिस्सा नहीं बनेगा, क्योंकि मृत्यु का संदेश हमेशा के लिए मिट चुका था।

आर्यन और मीरा कार में बैठकर शहर की ओर चल पड़े। सूरज की पहली किरणें उनकी यात्रा को आशीर्वाद दे रही थीं। रुद्रपुर अब उनकी यादों में बसा रहेगा, लेकिन एक डरावने सपने के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी लड़ाई के रूप में जिसे उन्होंने जीता था।

समाप्त.

ऋणनिर्देश

“कोरा कागज: मृत्यु का संदेश” मेरी अकेले की यात्रा है। इस उपन्यास को पूरा करने के दौरान मैंने कई उतार-चढ़ाव देखे। लेकिन मेरी कलम ने कभी मेरा साथ नहीं छोड़ा।

यह मेरा कर्तव्य है। क्योंकि कठिन समय में भी मैंने लिखना बंद नहीं किया। मेरे शब्दों ने ही मुझे सहारा दिया, और आज यह किताब आपके हाथों में है।

साथ ही, मैं अपने उन पाठकों का तहे दिल से आभारी हूं जिन्होंने मेरी कल्पना पर भरोसा किया। आपका प्यार ही मेरी सच्ची ताकत है।

- स्वाति डाइव

***** समाप्त *****

sjeet